भजन

तर्ज...... कित्ते नी तेरा रुतबा

अर्श की जो है निसबत, छिपी मारफत में मुतलक
इसे ही तो कहते निसबत जो खिलवत से है वाहेदत

1) खिलवत निसबत मारफत से, वाहेदत निसबत खिलवत से
मारफत ने जो इश्क दिया, खिलवत से वाहेदल ने पिया
देवे आनंद मारफत खिलवत, उसी में ही झूमे वाहेदत
यही तो है अर्स की निसबत, पाई जो हक की खिलवत

2) हक की जात ही निसबत हैं, निसबत में ही वाहेदत हैं
खूबी कहूं क्या निसबत की , निसबत वास्ते हकीकत खुली
बोहोत लहरें हैं निसबत में, इश्क मेहर और ईलम
भीगी जब निसबत इनमें, तो पाएं फिर हक मारफत

3) ए जो सरूप हैं निसबत के कहूं क्या है मारफत के लिए
मारफत खुद तो जाहिर हुई , निसबत प्यारी छिपाएं रखी
आसिक हक निसबत मासूक ,यही है अर्स की गुझ खिलवत
खिलवत इश्क सुराही है, प्याले वाहेदत पीये मारफत